International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 5.454 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 6, November 2019 |

राजस्थान में आर्य समाज आंदोलन

Arvind Kumar

Assistant Professor, Government College, Chouhtan, Barmer, Rajasthan, India

सार

दयानंद सरस्वती का दूसरी बार 1881 में राजस्थान के भरतपुर में आगमन हुआ। महाराणा सज्जन सिंह के अनुरोध पर दयानंद सरस्वती उदयपुर पहुँचे और उन्होंने आर्य समाज का प्रचार किया। दयानंद सरस्वती के नेतृत्व में उदयपुर में 1883 में एक परोपकारिणी सभा की स्थापना की। बाद में विष्णु लाल पांड्या ने मेवाड़ में आर्य समाज की स्थापना की।

परिचय

आर्य समाज के प्रवर्तक, प्रखर चिंतक व समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की आज पुण्यतिथि 136वीं पुण्यतिथि है। वह एक आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज-सुधारक, एक संन्यासी व देशभक्त थे। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा करने की परवाह किये बिना आर्यावर्त (भारत) के हिन्दू समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बनाया था। साथ ही बाल विवाह और सती प्रथा जैसी विभिन्न कुरीतियों, रूढ़िवादी परंपराओं तथा अंधविश्वासों के विरुद्ध जनता को जागरूक करने में महत्ती भूमिका निभाई। उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि प्रेषित की है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती 12 फरवरी, 1824 में गुजरात के मोरवी के टंकारा गांव में हुआ था। उनका असली नाम मूलशंकर था। उनके पिता करशनजी लालजी तिवारी एक कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। बचपन में घटित हुई एक घटना का उनके बाल मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि छोटी आयु में स्वामीजी सत्य की खोज में निकल पड़े। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही भारत में डूब चुकी वैदिक परंपराओं को पुनर्स्थापित करके विश्व में हिन्दू धर्म की पहचान करवाई। उन्होंने हिन्दी में ग्रंथ रचना आरंभ की तथा पहले के संस्कृत में लिखित ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। महर्षि दयानंद सरस्वती का भारतीय स्वतंत्रता अभियान में भी बहुत बड़ा योगदान था।

स्वामीजी का राजस्थान में राजनीतिक चेतना जागृत करने एवं शिक्षा प्रसार में स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज ने महत्वपूर्ण कार्य किया। स्वामीजी का प्रदेश में पहली बार आगमन 1865 में करौली के राजकीय अतिथि के रूप में हुआ जहां उन्होंने किशनगढ़, जयपुर, पुष्कर एवं अजमेर में अपने उदबोधन दिए। स्वामीजी दूसरी बार 1881 में भरतपुर और यहां से चित्तौड़ पहुंचे। उदयपुर में फरवरी, 1883 में स्वामीजी के सान्निध्य में 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना हुआ। बाद में विष्णुलाल पंड्या ने मेवाड़ में आर्य समाज की स्वापना की। उन्होंने 'वेदों की ओर चलो'नारा देकर जीवन में वेदों की उपयोगिता को समझाया। अपने व्याख्यानों में स्वामीजी क्षत्रिय नरेशों के चरित्र संशोधन और गौरक्षा पर विशेष बल दिया करते थे। उन्होंने स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी और स्वभाषा पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने व उनकी संस्था ने प्रदेश में स्वतंत्र विचारों के लिए पृष्ठभूमि तैयार की। उन्होंने समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया और आवाज उठाई। कहा जाता है एक वेश्य नन्हीजान ने स्वामीजी को दूध में विष मिलाकर दिलवा दिया जिससे 30 अक्टूबर, 1883 में अजमेर में उनका निधन हो गया।

आर्य समाज (Arya Samaj)-

- स्थापना- 1875 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने बॉम्बे में आर्य समाज की स्थापना की थी।
- 1865 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने राजा मदनपाल के बुलाने पर करौली की यात्रा की थी।
- 1865 ई. की करौली यात्रा स्वामी दयानंद सरस्वती की पहली राजस्थान यात्रा थी।
- 1865 ई. में करौली के राजा मदनपाल थे।
- 1881 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने भरतपुर की यात्रा की थी।
- 1881 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने अजमेर में आर्य समाज तथा जयपुर में वैदिक धर्म सभा की स्थापना की थी।
- कविराजा श्यामल दास जी के बुलाने पर स्वामी दयानंद सरस्वती ने मेवाड़ की यात्रा की थी।
- कविराजा श्यामल दास जी मेवाड़ में कवि थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के मेवाड़ यात्रा के दौरान मेवाड़ का राजा महाराणा सज्जन सिंह था।

- महाराणा सज्जन सिंह ने स्वामी दयानंद सरस्वती को गुलाब बाग के नौलखा महल में रखा था।
- गुलाब बाग नामक स्थान राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित है।
- नौलखा महल राजस्थान के उदयपुर जिले के गुलाब बाग में स्थित है।
- गुलाब बाग के नौलखा महल में ही स्वामी दयानंद सरस्वती ने "सत्यार्थ प्रकाश" (Satyartha Prakash) का द्वितीय संस्करण लिखा था।
- सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानंद सरस्वती के द्वारा लिखी गई पुस्तक है।

परोपकारिणी सभा (Paropkarini Sabha)-

- 1883 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने उदयपुर में "परोपकारिणी सभा" (Paropkarini Sabha) की स्थापना की थी।
- दयानंद सरस्वती ने महाराणा सज्जन सिंह को परोपकारिणी सभा का सभापति बनाया गया था।
- कालांतर में परोपकारिणी सभा को अजमेर भेज दिया गया या स्थानांतरित कर दिया गया।

वैदिक यंत्रालय-

- दयानंद सरस्वती ने अजमेर में "वैदिक यंत्रालय" (Vaidik Yantralay) नामक प्रिंटिंग प्रेस स्थापित की थी।
- दयानंद सरस्वती की पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" का द्वितीय संस्करण अजमेर में वैदिक यंत्रालय नामक प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित किया गया था।

दयानंद सरस्वती-

- मारवाड़ के प्रधानमंत्री सर प्रताप के बुलाने पर स्वामी दयानंद सरस्वती जोधपुर चले गये थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के जोधपुर आगम के समय मारवाड़ का राजा जसवंत सिंह-2 था।

विचार-विमर्श

- जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह-2 तथा उनके मंत्री राव राजा तेज सिंह स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभावित थे।
- महाराजा जसवंत सिंह-2 की प्रेमिका नन्हीं जान (Nanhi Jan) ने स्वामी दयानंद सरस्वती को जहर दे दिया था।
- 30 अक्टूबर 1883 ई. को दिपावली के दिन अजमेर में स्वामी दयानंद सरस्वती की मृत्यु हो गयी थी।

राजस्थान में आर्य समाज के कार्यकर्ता-

- मेवाड़- विष्णु पंड्या
- अलवर- वासुदेव खंडेलवाल
- भरतपुर- जुगल किशोर चतुर्वेदी, मास्टर आदित्येन्द्र
- अजमेर- चांदकरण शारदा, हरविलास शारदा
- जयपुर- कल्याण सिंह, श्यामलाल
- कल्याण सिंह तथा श्यामलाल ने हिन्दी राज भाषा आंदोलन भी चलाया था।

आर्य समाज का राजस्थान में प्रभाव या राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव-

- 1. आर्य समाज के कारण राजस्थान में सामाजिक कुरीतियों में कमी आयी थी। जैसे-
- (I) 1885 ई. में सर प्रताप ने जोधपुर में "बाल विवाह प्रतिरोधक अधिनियम" पारित किया था।
- 2. स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभाव के कारण राजस्थान के राजा जनता के प्रति उदार हो गये थे।
- 3. आर्य समाज ने शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिससे राजस्थान में शिक्षा को बढ़ावा मिला।
- 4. आर्य समाज ने महिलाओं से संबंधित कुरीतियां दूर की जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला तथा महिलाओं ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। जैसे-
- (I) सुखदा देवी (चांदकरण शारदा की पत्नि)

- 5. आर्य समाज के कारण राजस्थान में राजनीतिक चेतना का संचार हुआ।
- 6. आर्य समाज ने पुस्तकों तथा समाचार पत्रों का प्रकाशन किया था जिससे अभिव्यक्ति की आजादी को बढ़ावा मिला था। जैसे-
- (I) चांदकरण शारद की पुस्तकें-
- (A) दलितोद्धार (Dalitoddhar)- सामाजिक सुधार
- (B) विधवा विवाह (Vidhawa Vivah)- सामाजिक सुधार
- (II) आर्य समाज के समाचार पत्र-
- (A) जगहितकारक (Jaghitkarak)
- (B) जगलाभ चिन्तक (Jaglabh Chintak)
- (C) परोपकारक (Paropkarak)
- (D) देश हितैषी (Desh Hitaishi)
- 7. आर्य समाज ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को बढ़ावा दिया जिससे राजस्थान के घरेलू उद्योग धंधों को बल मिला।

2. देश हितैषिणी सभा (Desh Hitaishini Sabha)-

- स्थापना- देश हितैषिणी सभा की स्थापना 2 जुलाई 1877 ई. को की गई थी।
- संस्थापक- देश हितैषिणी सभा के संस्थापक महाराणा सज्जन सिंह थे।
- महाराणा सज्जन सिंह मेवाड़ रियासत के राजा थे।
- देश हितैषिणी सभा राजस्थान की किसी भी रियासत में समाज सुधार का पहला संगठन था। अर्थात् देश हितैषिणी सभा से पहले राजस्थान की किसी भी रियासत में समाज सुधार का कोई संगठन नहीं था।
- कालांतर में राजस्थान की अन्य रियासतों में भी देश हितैषिणी सभा की स्थापना की गई थी।

3. राजपूत हितकारिणी सभा (Rajput Hitkarini Sabha)-

- स्थापना- राजपूत हितकारिणी सभा की स्थापना 1989 ई. को की गई थी।
- संस्थापक- राजपूत हितकारिणी सभा के संस्थापक वॉल्टर (Walter) थे।
- वॉल्टर राजस्थान का A.G.G. था।
- कानूनी बाध्यता नहीं होने के कारण समाज सुधार के प्रयास सफल नहीं हो पाये थे अतः 1936 ई. में इस संगठन को बंद कर दिया गया था।
- वॉल्टर राजपूतों में समाज सुधार करना चाहता था अतः वॉल्टर ने अजमेर में दो अधिवेशन आयोजित किये।

वॉल्टर के द्वारा किये गये अधिवेशन के निर्णय-

- बहुविवाह का समाप्त किया जाना चाहिए।
- विवाह की न्यूनतम आयु तय की जानी चाहिए। जैसे-
- (I) लड़की की विवाह की आयु 14 वर्ष होनी चाहिए।
- (II) लड़के की विवाह की आयु 18 वर्ष होनी चाहिए।
- विवाह में होने वाले खर्च को सीमित किया जाना चाहिए।
- त्याग प्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए।

4. वीर भारत सभा (Veer Bharat Sabha)-

- स्थापना- वीर भारत सभा की स्थापना 1910 ई. में की गई थी।
- संस्थापक- वीर भारत सभा के संस्थापक केसरी सिंह बारहठ थे।
- वीर भारत सभा "अभिनव भारत" संगठन की एक शाखा थी।

5. हिन्दी साहित्य समिति (Hindi Sahitya Samiti)-

- स्थापना- हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना 1912 ई. में की गई थी।
- संस्थापक- हिन्दी साहित्य समिति के संस्थापक जगन्नाथ दास अधिकारी (Jagannath Das Adhikari) थे।
- हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का संगठन था।

हिन्दी सम्मेलन-

- 1927 ई. में भरतपुर में हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
- अध्यक्ष- 1927 ई. के भरतपुर के हिन्दी सम्मेलन के अध्यक्ष गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को बनाया गया।

परिणाम

राजस्थान में राजनीतिक जागृति के कारण

किसानों में व्याप्त असन्तोष और उनके आन्दोलन

इस समय जागीरदारों द्वारा किसानों पर बहुत अत्याचार किया जा रहा था। सारंगधरदास के अनुसार, 'जीवन और मृत्यु के अलावा अन्य सभी बातों में जागीरदार लोग अपनी प्रजा के वास्तविक शासक थे तथा वे अपनी प्रजा पर मनमाना अत्याचार करते थे।'

किसानों के असन्तोष के कारण - (क) जागीरदार किसानों पर बहुत अत्याचार कर रहे थे। डॉ० एम० एस० जैन के अनुसार , ' जागीरदारों की बढ़ती हुई विलासिता का व्यय किसानों पर लाद दिया गया। (ख)इस समय कृषि भूमि की माँग में वृद्धि होने के कारण जागीरदारों का शोषण भी बढ़ता जा रहा था।

बिजौलिया का कृषक आन्दोलन - बिजौलिया की जागीर मेवाड़ के अधीन थी तथा यहाँ के किसानों में जागीरदारों का शोषण के विरुद्ध भयंकर असन्तोष व्याप्त था। अत: उन्होंने नानजी पटेल एवं साधु सीताराम के नेतृत्व में आन्दोलन छेड़ दिया। जागीरदारों तथा मेवाड़ के महाराजा ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिए बहुत अत्याचार किये, परन्तु उन्हें असफलता ही हाथ लगी। १९१५ ई० में विजय सिंह पथिक ने आन्दोलन का नेतृत्व सम्भाल लिया। धीरे - धीरे बिजौलिया के आन्दोलन ने इतना उग्र रुप धारण कर लिया कि राष्ट्रीय स्तर पर उसकी चर्चा की जाने लगी। वहाँ के किसानों ने अंग्रेजों के समक्ष अपनी माँगें रखी तथा उसकी गाँधीजी का नैतिक समर्थन भी प्राप्त कर लिया।

सरकार को इस आन्दोलन में रुस की बेल्शेविक आन्दोलन की छवि दिखने लगी। अत: उसने १९२२ ई० में बिजौलिया के किसानों से समझौता कर लिया, परन्तु यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ। १९३१ ई० में किसानों ने शान्तिपूर्ण तरीके से पुन: आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। सेठ जमनालाल बजाज एवं माणिक्यलाल भी इस आन्दोलन से जुड़गये थे तथा आन्दोलन ने अखिल भारतीय समस्या का रुप ले लिया था।

जमनालाल बजाज ने उदयपुर के महाराजा से आन्दोलन के बारे में बातचीत की, जिसके कारण जपलाई , १९३१ ई० को समझौता हो गया, परन्तु सरकार ने किसानों के उनकी जमीनें वापस नहीं दी। १९४१ ई० में किसानों को उनकी जमीनें लौटा दी गयीं, जिसके कारण यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

बेंगू का किसान आन्दोलन - बिजौलिया आन्दोलन से प्रेरित होकर बेंगू के किसानों ने भी १९२१ ई० में आन्दोलन छेड़ दिया। जागीरदार ने हिंसात्मक साधनों के द्वारा इस आन्दोलन को निर्ममतापूर्वक कुचलने का प्रयास किया, परन्तु इससे आन्दोलन और तीव्र गति से भड़क उठा। भारतीय समाचार पत्रों ने किसानों पर किये जा रहे अत्याचारों के सामाचार को प्रमुखता से छापा , जिसके कारण यह आन्दोलन सुर्किखयों में आ गया। इससे घबराकर वहाँ के जागीरदारों ने किसानों से

समझौता कर लिया।

भोमट का भील आन्दोलन - १९१८ ई० में मेवाड़ सरकार के प्रशासनिक सुधारों के विरुद्ध भोमट के भीलों ने आन्दोलन छेड़ दिया। गोविन्द गुरु ने भीलों में एकता स्थापित करने का प्रयास किया। मोतीलाल तेजावत ने भील आन्दोलन का नेतृत्व किया, जिसके कारण इस आन्दोलन ने और जोर पकड़ लिया। भीलों ने लागत तथा बेगार करने से इनकार कर दिया। सरकार ने आन्दोलन को कुचलने के लिए दमन - चक्र का सहारा लिया, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। इस आन्दोलन से भीलों को अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई। सरकार ने अनेक प्रयत्नों के बाद १९२९ ई० में तेजावत को गिरफ्तार कर लिया तथा १९३६ ई० में रिहा कर दिया।

मारवाड़ में किसान आन्दोलन

मारवाड़ में भी किसानों पर बहुत अत्याचार होता था। १९२३ ई० में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ हितकारी सभा' का गठन किया और किसानों को आन्दोलन करने हेतु प्रेरित किया, परन्तु सरकार ने 'मारवाड़ हितकारी सभा' को गैर - कानूनी संस्था घोषित कर दिया। अब कियान आन्दोलन का नेतृत्व मारवाड़ लोक परिषद ने अपने हाथों में ले लिया। इस संस्था ने किसानों को आन्दोलन हेतु प्रोत्साहित किया।

सरकार ने किसान आन्दोलन को ध्यान में रखते हुए मारवाड़ किसान सभा नामक संस्था का गठन किया, परन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। अब सरकार ने आन्दोलन का दमन करने हेतु दमन की नीती का सहारा लिया, परन्तु उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। चण्डावल तथा निमाज नामक गाँवों के किसानों पर निर्ममता पूर्वक अत्याचार किये गये तथा डाबरा में अनेक किसानों को निर्दयता पूर्वक मार दिया गया। इससे सम्पूर्ण देश में उत्तेजना की लहर फैल गई, किन्तु सरकार ने इसके लिए किसानों को उत्तरदायी ठहराया। आजादी के बाद भी जागीरदार कुछ समय तक किसानों पर अत्याचार करते रहे, परन्तु राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन के बाद किसानों को खातेदारी के अधिकार मिल गये।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार ने भी राजनीतिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ० एम० एस० जैन के अनुसार '१९३१ में समस्त राजस्थान में एक प्रतिशत से भी कम लोग अंग्रेजी बोलते - जानते थे।'

अंग्रेजी बोलने वालों का यह प्रतिशत कम होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। आधुनिक ढ़ंग से शिक्षित ये लोग सरकारी नौकरी की प्राप्ति के इच्छुक थे, परन्तु राजकीय सेवा में नियुक्ति भाई - भतीजावाद के आधार पर दी जाती थी। अत: शिक्षित वर्ग के लोगों में असन्तोष फैलना स्वाभाविक ही था। ये शिक्षक स्वतन्त्रता तथा समानता का पाठ पढ़ चुके थे अत:उनमें निरन्तर राजनीतिक चेतना के विकास होता चला गया।

समाचार - पत्रों एवं साहित्य का योगदान

१८८५ ई० में 'राजपूताना गजट' एवं १८८९में 'राजस्थान समाचार 'नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इनमे ब्रिटिश सरकार के कार्यों की खुला आम आलोचना की जाती थी, अत: सरकार ने इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। विजयसिंह पथिक ने 'राजस्थान केसरी' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसमें ब्रिटिश साशन के कार्यों की कटु आलोचना की जाती थी। अत: सरकार ने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। १९२३ ई० में प्रकाशित 'तरुण राजस्थान ने सरकारी दमन का जोरदार विरोध किया, जिसके कारण जनता में तीव्रगति से राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ।

साहित्यकारों ने भी समाचार पत्रों की भाँति जनता में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। केसरी सिंह बारहठ की कविताएँ राष्ट्रीय भावनाओं से ओत - प्रोत थीं। राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार एवं महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने 'वीर सतसई' नामक ग्रन्थ की रचना की, जिससे यहाँ के भीरु शासक कंपकंपायमान हो उठे। इसके अतिरिक्त जयनारायण

व्यास की कविताओं एवं पंडित हीरालाल शास्री के गीतों से भी जनता में अभूतपूर्व राजनीतिक चेतना जागृत हुई।

मध्यम वर्ग का योगदान

मध्यम वर्ग ने भी जनता में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करने में सराहनीय योगदान दिया। जोधपुर के जयनारायण व्यास, बिजौलिया के विजय सिंह पथिक एवं जयपुर के पं० हीरालाल शास्री आदि मध्यम वर्ग के प्रतिनिधी थे, जिन्होंने आन्दोलन को गति प्रदान की। इस वर्ग का मुख्य उद्देश्य जनता में राजनीतिक तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास करना था।

आधुनिक शिक्षा के प्रसार से मध्यम वर्ग के शिक्षित नवयुवक प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद और स्वतन्त्रता के महान आदर्शों से परिचित हुए। इसके बाद उन्होंने ब्रिटिश शासन की आधार - स्तम्भ सामन्ती व्यवस्था, जो मध्यकाल से भारत में चली आ रही थी, को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया।

आर्य समाज का प्रभाव

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्दू धर्म, समाज एवं राष्ट्र के पुरुत्थान के लिए प्रयत्नशील थे। उन्होंने राजस्थान की विभिन्न रियासतों की यात्रा की और वहाँ के शासकों तथा जनता के समक्ष चार बातें रखीं - स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी एवं स्वभाषा। राजस्थान के विभिन्न नगरों में भी आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हो चुकी थीं। स्वामीजी ने १८८३ ई० में परोपकारिणी सभा नामक संस्था की स्थापना की। उन्होंने कहा कि वे हिन्दूओं को एकता के सूत्र में बांधना चाहते हैं और राजाओं को सन्मार्ग पर लाना चाहते हैं। यही नहीं, उन्होंने स्वशासन पर भी बल दिया है। उनकी शिक्षाओं से राजस्थान के लोग सामाजिक तथा धार्मिक आवश्यकताओं की अनुभूति करने लगे और राजनैतिक सुधारों के प्रति भी जागरुक हुए। इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती और बाद में आर्यसमाज ने राजस्थान में राष्ट्रवाद और राजनैतिक चेतना की आधारशिला रखी।

प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान समस्त राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश शासन की हरसम्भव सहायता की। जब राजपूत सैनिक विश्व के अन्य देशों में युद्ध करने गये, तो वहाँ की स्वतन्त्रता के नये विचारों तथा आदर्शों से अत्यधिक प्रभावित हुए। स्वदेश लौटने पर उन्होंने अपने मित्रों, पड़ोसियों तथा अन्य लोगों को अपने अनुभवों के बारे में बता कर उनमें स्वतन्त्रता की भावना प्रजवल्लित कर दी। प्रथम विश्व युद्ध में अपार धनराशि खर्च हुई, अत: उसने आन्दोलन का मार्ग अपना लिया।

पड़ोसी प्रान्तों का प्रभाव

पड़ोसी प्रान्तों में उमड़ती हुई राष्ट्रीयता की भावना का भी राजस्थान पर बहुत प्रभाव पड़ा। इस समय मध्यम वर्ग ने ब्रिटिश सरकार की कटु आलोचना करते हुए विभिन्न प्रान्तों में अनेक संघों का निर्माण किया। पाश्चात्य शिक्षा के लाभ उठा चुकी राजपूत राज्यों की जनता ने राष्ट्रीय पथ पर चलने का निश्चय किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने भी यह अनुभव किया कि ब्रिटिश प्रान्तों में जिस तरह से स्वराज्य के लिए संघर्ष चल रहा है, उसका प्रभाव देशी रियासतों की जनता पर भी पड़ेगा और अनुदार विचारधारा वाले लोग भी समय के साथ - साथ राष्ट्र की मूलधारा में घुल - मिल जायेंगे।

क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का प्रभाव

राजस्थान के क्रान्तिकारियों ने भी राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थान के प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों में अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, राव गोपाल सिंह, विजय सिंह पथिक एवं रामनारायण चौधरी आदि प्रमुख थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने राजस्थान में क्रान्तिकारियों के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।

निष्कर्ष

राजस्थान में राजनीतिक चेतना का विकास

१८८८ ई० में इलाहाबाद में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था, जिसमें अजमेर के प्रतिनिधि मण्डल ने भाग लिया था। १८८५ ई० में अजमेर से 'राजस्थान गजट 'व १८८९ में ' राजस्थान समाचार 'नामक समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, किन्तु ब्रिटिश सरकार की आलोचना करने के कारण सरकार ने शीघ्र ही इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। १९०५ ई० में बंगाल विभाजन के समय सारे देश में स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उस समय राजस्थान में भी स्थान - स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं पर बल देते हुए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। १९१९ ई० में अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ एवं विजय सिंह दीपक ने मिलकर 'राजस्थान सेवा संघ' नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था ने राजनीतिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'राजस्थान केसरी 'तथा 'तरुण राजस्थान' नामक समाचार पत्रों ने राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने की दिशा में जो सहयोग किया उसे भुलाया नहीं जा सकता।

१९१९ में राजस्थान - मध्य भारत सभा नामक संस्था का गठन किया गया, जिसने पाँच वर्ष तक काफी महत्वपूर्ण कार्य किया। इस संस्था ने अपनी गतिविधियों के माध्यम से राजस्थान की जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "आधुनिक भारत का रहस्य-1". मूल से 28 दिसंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 फ़रवरी 2010.
2. ↑ स्वामी रामदेव के गुरु आचार्य बलदेव का देहान्त
3. ↑ "आर्यसमाज की स्थापना और इसके नियमों पर एक दृष्टि". मूल से 31 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 अप्रैल 2018.
4. ↑ "आर्यसमाज का राष्ट्र को योगदान". मूल से 22 अप्रैल 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 अप्रैल 2018.
5. ↑ आर्य समाज का विस्तार
6. ↑ "आधुनिक भारत का रहस्य-1". मूल से 28 दिसंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 फ़रवरी 2010.
7. ↑ "स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज". मूल से 3 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अप्रैल 2018.
8. ↑ "स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान". मूल से 16 अप्रैल 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 अप्रैल 2018.
9. ↑ बलिदान देने वाले कुछ आर्य शहीदों के संक्षिप्त परिचय
10. ↑ आर्यसमाज का योगदान
11. ↑ आर्यसमाज और गुरुकुल
12. ↑ [aryamantavya.in/contribution-of-arya-samaj-in-south-india-2/ दक्षिण भारत में आर्यसमाज का योगदान] (डॉ. ब्रह्ममुनि)
13. ↑ "स्वामी दयानंद और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन". मूल से 26 जुलाई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जुलाई 2014.
14. ↑ "आर्यभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में ऋषि दयानन्द का योगदान". मूल से 18 मई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 मई 2018.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 5.454 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 6, November 2019 |

15. ↑ “ऋषि दयानन्द द्वारा हिन्दी अपनाने से इसका देश देशान्तर में प्रचार हुआ”
16. ↑ आर्यसमाज : हिन्दी पत्रकारिता का स्वर्णिम कलश
17. ↑ "आर्यसमाज : हिन्दी पत्रकारिता का स्वर्णिम कलश". मूल से 22 अप्रैल 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 अप्रैल 2018